(ब) समुद्री जलमार्ग
(Oceanic Water Ways)

समुद्र में जलपोतों (जलयानों) के आने-जाने के लिए किसी मार्ग की आवश्यकता नहीं होती है किन्तु बन्दरगाहों तथा अन्य सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए जलपोत सामान्यत: निर्धारित दिशा तथा मार्गों से ही चलते हैं। वर्तमान समय में अधिकांश जलयान पूर्व निर्धारित मार्गों, समुद्र पतनों तथा समय के अनुसार चलते हैं और न्यूनतम दूरी वाले बृहत् वृत मार्ग (Great Circle Route) का अनुसरण करते हैं। बृहत् वृत वाले न्यूनतम दूरी वाले मार्ग में अवरोध उपस्थित होने पर जलयान उस मार्ग से कुछ हट भी सकते हैं। विश्व के प्रमुख समुद्री जलमार्ग निम्नलिखित हैं—

1. उत्तरी अटलांटिक मार्ग (North Atlantic Route)
2. स्वेज नहर मार्ग (Suez Canal Route)
3. उत्तमाशा अंतरीप मार्ग (Cape of Good Hope Route)
4. पनामा नहर मार्ग (Panama Canal Route)

Scanned with CamScanner

5. प्रशांत महासागरीय मार्ग (Pacific Oceanic Route)
6. कैरीबियन सागरीय मार्ग (Caribbean Sea Route)
7. दक्षिणी अटलांटिक मार्ग (South Atlantic Route)

1. उत्तरी अटलांटिक मार्ग (North Atlantic Route)

यह विश्व का सर्वाधिक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग है जो विश्व के दो सर्वाधिक समृद्ध एवं विकसित प्रदेशों—पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका (संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा) को जोड़ता है। उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट पर स्थित समुद्र पत्तनों तथा पश्चिमी यूरोप (भूमध्य सागर से श्वेत सागर तक) के समुद्र पत्तनों के मध्य चलने वाले सामान्यत: सभी जलयान इसी जलमार्ग का अनुसरण करते हैं। यह समुद्री मार्ग वास्तविक बृहत् वृत मार्ग से विचलित होकर थोड़ा दक्षिण से होकर आता है। न्यूनतम दूरी वाले (बृहत् वृत्त मार्ग) मार्ग पर लैब्रोडोर ठण्डी धारा और गल्फस्ट्रीम मार्ग धारा के मिलने से अधिक कुहरा छाया रहता है और साथ ही उत्तर से आने वाले आइसवर्गों (हिमखण्डों) की उपस्थिति से जलयानों के टकराने का भय बना रहता है। शीतऋतु में उत्तर से शक्तिशाली तूफान (हिम झांझावात) भी आते हैं। यही कारण है कि विभिन्न खतरों से सुरक्षित रहने की दृष्टि से जलयान न्यूनतम दूरी वाले (सीधे) मार्ग से कुछ दक्षिण की ओर हटकर चलते हैं।

इस मार्ग के पश्चिमी छोर पर संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के पूर्वी तटीय समुद्र पत्तन स्थित हैं जिनमें संयुक्त राज्य के न्यूयार्क, फिलाडेल्फिया, बोस्टन, बाल्टीमोर, न्यूआर्लियन्स आदि तथा कनाडा के क्यूबेक, मांट्रियल, हेलीफाक्स आदि समुद्र पत्तन प्रमुख हैं। ये पत्तन विशाल पोताश्रय (Harbour) से युक्त हैं और इनके पृष्ठ प्रदेश समृद्ध हैं। उत्तरी अटलांटिक मार्ग के पूर्वी छोर पर अनेक प्रसिद्ध बन्दरगाह स्थित हैं जिनमें लन्दन,मानचेस्टर, ग्लासगो, लीवरपुर (ब्रिटेन) एम्सटर्डम, राइर्डम (नीदरलैण्ड), हैमबर्ग (जर्मनी), कोपेनहेगेन, (डेनमार्क), स्टाकहोम (स्वीडन) लिम्बन (पुर्तगाल) आदि प्रमुख हैं। भूमध्यसागर के उत्तरी तट पर स्थित अनेक बन्दरगाहों से उत्तरी अमेरिका जाने वाले जलयान भी इसी मार्ग का अनुसरण करते हैं।

उत्तरी अटलांटिक मार्ग के पश्चिम और पूर्व में क्रमश: उत्तरी अमेरिका और यूरोप के विकसित देश स्थित हैं जो आर्थिक दृष्टि से अधिक सम्पन्न, औद्योगीकृत और अधिक जनसंख्या वाले हैं। दोनों क्षेत्रों के आर्थिक उत्पादनों में पर्याप्त भिन्नता भी पायी जाती है जो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रगति हेतु सशक्त आधार प्रस्तुत करती है। प्रति व्यक्ति आय और जीवन स्तर उच्च

Scanned with CamScanner

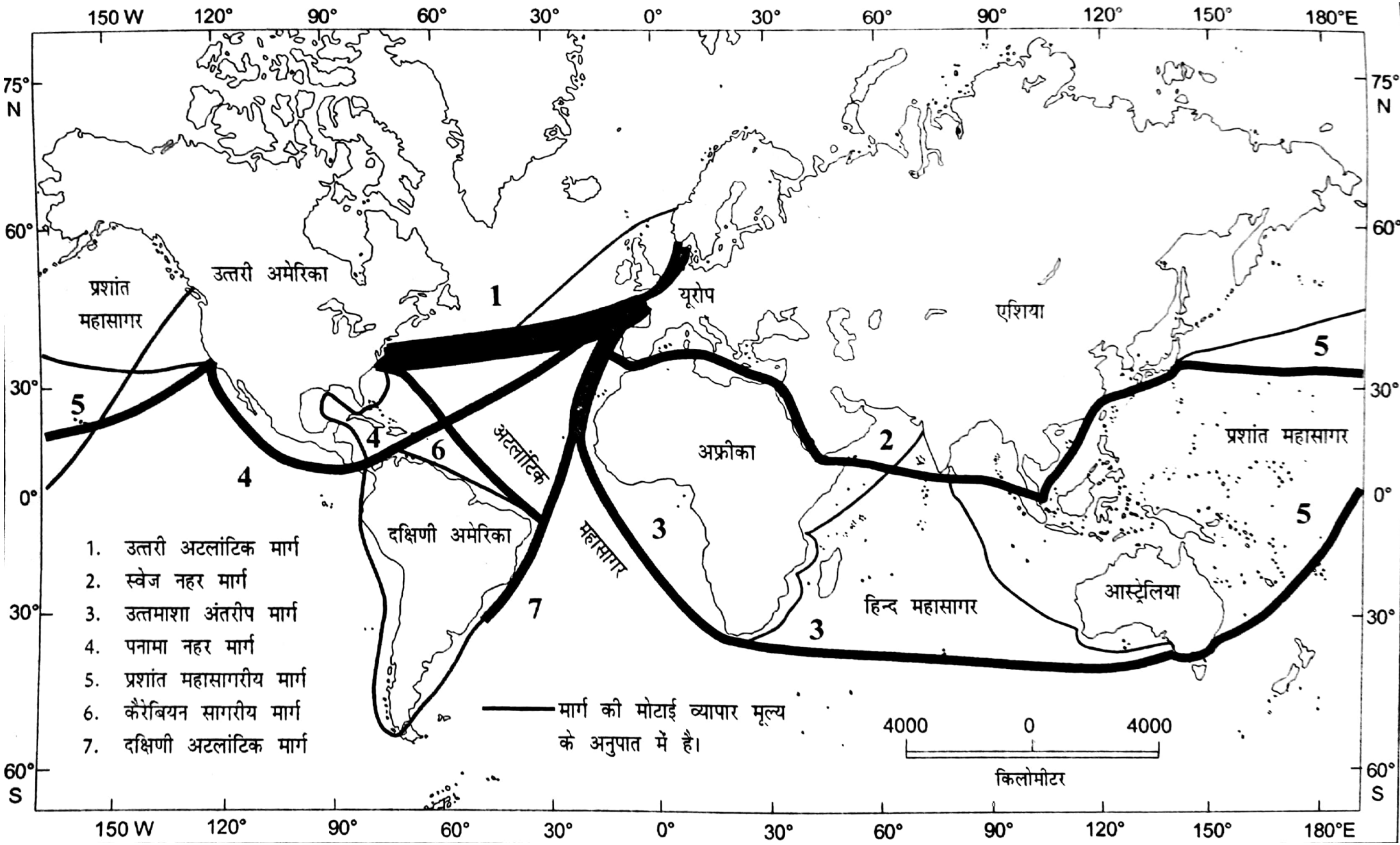

Scanned with CamScanner

होने के कारण इन दोनों प्रदेशों में उपभोक्ता वस्तुओं की मांग अधिक पायी जाती हैं। विश्व के सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लगभग 30 से 40 प्रतिशत वस्तुओं का आयात-निर्यात इसी मार्ग से होकर होता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका से अनेक प्रकार के निर्यात माल (इस्पात, मोटर गाड़ियाँ, मशीनें आदि), कृषि उत्पादन (कपास, मक्का, गेहूँ, सोयाबीन आदि), खनिज पदार्थ (कोयला, पेट्रोलियम आदि) तथा कनाडा से कागज, गेहूँ, लकड़ी, लुग्दी आदि वस्तुएँ यूरोपीय देशों को भेजी जाती हैं। उत्तरी अमेरिका से यूरोप को भेजे जाने वाले पदार्थों का भार यूरोप से आने वाले पदार्थों के भार की तुलना में लगभग तीन-चार गुना अधिक होते हैं। यूरोपीय देशों से अधिकतर निर्मित सामग्रियाँ उत्तरी अमेरिका को भेजी जाती हैं जो अपेक्षाकृत् कम भार वाली तथा उच्च मूल्य वाली होती हैं। यूरोपीय देशों में ऊनी-वस्त्र, चीनी, मांस, मछली, कागज की लुग्दी, चीनी मिट्टी, उर्वरक, कृषि यंत्र, वैज्ञानिक वस्तुएँ आदि संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा को भेजी जाती हैं। इस प्रकार जब अमेरिका से यूरोप जाने वाले जहाज लौटते समय यूरोपीय सामग्रियों को लेकर वापस लौटते हैं तब उनमें बहुत सा स्थान खाली पड़ा रहता है। खाली जगह को भरने के लिए वे अपेक्षाकृत् सस्ती और भारी वस्तुओं जैसे चीनी मिट्टी, लोहा और इस्पात, इस्पात के सामान आदि को भी भर लेते हैं।

2. स्वेज नहर मार्ग
(Suez Canal Route)

यह विश्व का सबसे लम्बा समुद्री मार्ग है जो अटलांटिक महासागर से लेकर भूमध्य सागर और स्वेज नहर से होता हुआ हिन्द महासागर के उत्तरी-पूर्वी भाग तक जाता है। इसे पश्चिमी यूरोप-भूमध्य सागर-हिन्द महासागर मार्ग के नाम से भी जाना जाता है। यह मार्ग उत्तरी अमेरिका तथा पश्चिमी यूरोपीय बन्दरगाहों को अफ्रीका के पूर्वी तटीय बन्दरगाहों तथा दक्षिणी एवं दक्षिणी-पूर्वी एशिया के बन्दरगाहों (पत्तनों) से जोड़ता है। उत्तरी अमेरिका तथा यूरोप से एशियाई देशों (सऊदी अरब, ईराक, ईरान, पाकिस्तान, भारत, श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैण्ड, सिंगापुर, इण्डोनेशिया, चीन, जापान आदि तथा पूर्वी अफ्रीकी देशों को जाने वाले व्यापारिक जलयान इसी मार्ग से होकर जाते हैं। इस मार्ग का प्रयोग स्वेज नहर के निर्माण (1869 ई०) के पश्चात् ही सम्भव हुआ क्योंकि इसके पूर्व लाल सागर और भूमध्य सागर स्थलीय अवरोध द्वारा एक दूसरे से अलग थे।

स्वेज मार्ग से होकर यूरोप और एशिया के अधिकांश महत्वपूर्ण समुद्र पत्तनों के व्यापारिक जलयान आते-जाते हैं। इस मार्ग पर यूरोप के लेनिनग्राड, हेम्बर्ग, एम्सटर्डम, रोटर्डम, लन्दन, लीवारपुर, मानचेस्टर, लिस्बन, जिब्राल्टर, रोम, जेनेवा, नेपुल्स आदि, मिस्र का पोर्टसईद, एशिया के अदन, कराची, मुम्बई, कोलम्बो, चेन्नई, कोलकाता, यांगून, सिंगापुर आदि तथा पूर्वी अफ्रीका के मोम्बासा, जंजीवार, डरबन आदि समुद्र पत्तन स्थित हैं। सिंगापुर से आगे इस मार्ग का विस्तार चीन और जापान तक भी पाया जाता है जिस पर शंघाई, हांगकांग, टोकियो आदि पत्तन स्थित हैं। इस मार्ग का विस्तार आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड तक है और पर्थ, मेलबोर्न, सिडनी आदि समुद्रपत्तन भी इससे सम्बद्ध हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के परिमाण में स्वेज मार्ग का महत्व उत्तरी अटलांटिक मार्ग से कम है किन्तु वस्तुओं की विविधता के लिए यह सर्वप्रमुख हैं। इस मार्ग से दूरगामी वस्तुओं का परिवहन होता है जिसके अन्तर्गत निम्नांकित व्यापारिक क्षेत्र और वस्तुएँ सम्मिलित हैं—

(i) पश्चिमी यूरोप और दक्षिणी तथा दक्षिणी-पूर्वी एशिया के मध्य इसी मार्ग से व्यापार होता है, पश्चिमी यूरोपीय देशों से निर्मित समान, मशीनें, दवाएँ आदि एशियाई देशों को और एशियाई देशों से औद्योगिक कच्चे माल, खाद्य पदार्थ, मसाले, वस्त्र आदि का निर्यात किया जाता है।

(ii) पश्चिमी यूरोप और पूर्वी अफ्रीका के मध्य इसी मार्ग से व्यापार होता है। पूर्वी अफ्रीका और संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य भी इसी मार्ग से व्यापारिक आदान-प्रदान होते हैं। पूर्वी अफ्रीकी समुदपत्तनों से यूरोप तथा अमेरिका के लिए कहवा, तम्बाकू, खनिज पदार्थ, चमड़ा, तिलहन आदि सामग्रियों का तथा यूरोप और अमेरिका से सामान्यत: निर्मित औद्योगिक पदार्थों, मशीनों, उपकरणों आदि का निर्यात होता है।

(iii) पश्चिमी यूरोपीय तथा भूमध्य सागरीय देशों और आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैण्ड के बीच यात्रियों तथा विभिन्न पदार्थों का परिवहन इस मार्ग से होता है क्योंकि उत्तमाशा अंतरीप मार्ग की तुलना में इससे लगभग 1600 किमी० दूरी की बचत होती है।

(iv) पश्चिमी यूरोप के समुद्र पत्तनों और भूमध्य सागरीय पत्तनों के मध्य व्यापारिक वस्तुओं का आदान-प्रदान जिब्राल्टर जलसन्धि से होकर होता है जो विस्तृत स्वेज मार्ग का ही एक अंग है।

(v) भूमध्य सागर के समुद्रपत्तनों के मध्य पूर्व-पश्चिम दिशा में विभिन्न पदार्थों की अपेक्षाकृत् कम दूरी का परिवहन होता है। पूर्वी भूमध्य सागर तथा कालासागर तट पर स्थित पत्तनों से पश्चिमी भूमध्य सागर तटीय पत्तनों के लिए खाद्यान्न, कपास, तम्बाकू, लौह अयस्क, पेट्रोलियम आदि भेजे जाते हैं और बदले में फल, शराब, इस्पात एवं निर्मित सामान मंगाये जाते हैं।

Scanned with CamScanner

(vi) फारस की खाड़ी से पेट्रोलियम पाकिस्तान, भारत, बांग्लादेश, दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों, चीन, जापान आदि को निर्यात किया जाता है। इसी मार्ग से खाड़ी तटीय देश खाद्यान्न, चाय, वस्त्र आदि आवश्यक वस्तुएँ आयात करते हैं।

3. उत्तमाशा अंतरीप मार्ग (Cape of Good-hope Rute)

पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका के पूर्वी तटीय समुद्र पत्तनों से इस मार्ग द्वारा पूर्वी अफ्रीका और आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैण्ड के लिए जलयान जाते हैं। पश्चिमी यूरोप के लिए यह मार्ग स्वेज मार्ग की तुलना में अधिक लम्बा हो जाता है किन्तु सस्ता पड़ता है क्योंकि स्वेज मार्ग से जाने वाले जलयानों को भारी कर चुकाना पड़ता है। अधिक समय लगने के कारण इस मार्ग से केवल ऐसे भारी और टिकाऊ पदार्थों को ही भेजा जाता है जिनके लिए विशेष शीघ्रता नहीं रहती है। इस मार्ग द्वारा आस्ट्रेलिया और अफ्रीका से लौह अयस्क, तांबा, मैंगनीज, क्रोमाइट, सीसा तथा अन्य खनिज पदार्थ और मांस, ऊन, चमड़े, कपास, कहवा, चाय आदि उपभोक्ता वस्तुएँ यूरोपीय तथा अमेरिकी देशों को भेजी जाती हैं। यूरोपीय तथा अमेरिकी देशों से विविध प्रकार की मशीनें, कृषि उपकरण, मोटर गाड़ियां, दवाएँ, उर्वरक, पेट्रोलियम पदार्थ आस्ट्रेलिया और अफ्रीकी देशों को पहुँचाये जाते हैं।

4. पनामा नहर मार्ग (Panama Canal Route)

यह मार्ग उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका के मध्य निर्मित पनामा नहर से जाता है। पनामा नहर के द्वारा संयुक्त राज्य और कनाडा के पूर्वी और पश्चिमी तटीय पत्तनों के मध्य तथा दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तटीय पत्तनों और दोनों अमेरिका के पूर्वी तटीय पत्तनों सहित पश्चिमी यूरोपीय पत्तनों के मध्य अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सुगम हो गया है। उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका के पूर्व तटवर्ती पत्तनों तथा पश्चिमी यूरोपीय पत्तनों से आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और जापान को जाने वाले बहुत से व्यापारिक जलयान पनामा मार्ग का अनुसरण करते हैं।

दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तटीय देशों के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का लगभग 99 प्रतिशत पनामा मार्ग से ही सम्पन्न होता है। इसमें लोहा, तांबा आदि खनिज पदार्थों तथा कच्ची सामग्रियों की बहुलता होती है। यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तटीय पत्तनों से जापान, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड को कहवा, पेट्रोलियम, चीनी, कपास, लौह अयस्क, स्क्रैप (रद्दी लोहा) आदि भेजा जाता है। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड से ऊन, मक्खन, पनीर, चमड़े आदि अमेरिकी तथा यूरोपीय देशों को भेजे जाते हैं।

5. प्रशांत महासागरीय मार्ग (Pacific Oceanic Route)

प्रशांत महासागर एक अत्यन्त विस्तृत महासागर है जो पृथ्वी के लगभग 12 प्रतिशत क्षेत्र पर फैला हुआ है। इस विशाल महासागर के मध्य में ऐसे द्वीपों का अभाव है जिसका विशिष्ट व्यापारिक महत्व हो। इसके साथ ही इसके पश्चिमी भाग में जापान को छोड़कर कोई उद्योग प्रधान विकसित देश नहीं है और पूर्वी भाग में भी संयुक्त राज्य तथा कनाडा के अतिरिक्त अन्य सभी विकासशील देश हैं। इन कारणों से प्रशांत महासागर से होकर जाने वाले व्यापारिक मार्गों का महत्व अपेक्षाकृत् कम है।

प्रशांत महासागर का मुख्य जलमार्ग उत्तरी प्रशांत महासागर के मध्य स्थित हवाई द्वीप के **होनूलुलू** पत्तन से होकर जाता है। **होनूलुलू** प्रशांत महासागरीय मार्ग का प्रधान केन्द्र है। पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के जलयान पनामा नहर को पार करके सीधे होनूलुलू पहुँचते हैं। होनूलुलू से मुख्यतः दो मार्ग हो जाते हैं—(1) उत्तरी मार्ग जो जापान, चीन, फिलीपीन्स और हिन्देशिया को जाता है, और (2) दक्षिणी मार्ग जिस पर चलकर जलयान आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड को जाते हैं। उत्तरी अमेरिका और उत्तरी दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तटीय पत्तनों से चलने वाले जलयान भी इन्हीं मार्गों का अनुसरण करते हैं। इसके अतिरिक्त एक अन्य मार्ग उत्तरी प्रशांत महासागर से जाता है जो चीन और जापान से कनाडा और संयुक्त राज्य के पश्चिमी तटीय पत्तनों को जाने के लिए एल्युशियन द्वीपों के समीप से होता हुआ बृहत् वृत्त मार्ग का अनुसरण करता है। इस मार्ग द्वारा सैन्फ्रांसिस्को या बैंकूवर से टोकियो या याकोहामा की दूरी होनूलुलू मार्ग की तुलना में लगभग 2500 किमी० कम पड़ती है।

प्रशांत महासागरीय मार्ग के प्रमुख समुद्र पत्तन पूर्वी एशिया के टोकियो, याकोहामा, कोबे, ओसाका, शंघाई, हांगकांग, मनीला आदि, आस्ट्रेलिया-न्यूजीलैण्ड के सिडनी, क्राइस्टचर्च, पश्चिमी उत्तरी अमेरिका के सैन्फ्रान्सिस्को लाएंजिल्स, बैंकूवर, सिएटल, पोर्टलैण्ड, प्रिंसरूपर्ट आदि हैं।

एशिया के पत्तनों से चीनी, चाय, मछली, सूती वस्त्र, वनस्पति तेल, सस्ती कारें यूरोप तथा अमेरिकी देशो को भेजी जाती हैं। अमेरिका के पश्चिमी तटीय पत्तनों से लकड़ी, काष्ठ लुग्दी, कागज, गेहूँ, स्क्रैप (रद्दी लोहा), पेट्रोलियम तथा निर्मित सामग्रियां एशिया, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड को भेजी जाती हैं। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड से अमेरिकी देशों को ऊन, मक्खन, पनीर, चमड़ा तथा सीसा, जस्ता आदि खनिज निर्यात किये जाते हैं। वेनेजुएला और कोलम्बिया इस मार्ग से पेट्रोलियम भेजते हैं।

Scanned with CamScanner

6. खाड़ी एवं कैरीबियन सागरीय मार्ग (Gulf and Caribbean Sea Route)

कैरीबियन सागर के तटवर्ती देशों—कोलम्बिया, वेनेजुएला, ट्रिनिडाड, गायना, सूरीनाम, मध्य अमेरिकी देशों, पश्चिमी द्वीप समूह, मैक्सिको की खाड़ी तटीय देशों—मैक्सिको और संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य इस मार्ग से वस्तुओं का आदान-प्रदान होता है। यह लघु दूरी का समुद्री मार्ग है जो मैक्सिको की खाड़ी तथा कैरीबियन सागर तटीय बन्दरगाहों को संयुक्त करता है। यह मार्ग पनामा नहर द्वारा उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तटीय पत्तनों से जुड़ा हुआ है। उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तटीय पत्तनों के माध्यम से यह मार्ग उत्तरी अटलांटिक मार्ग से भी सम्बद्ध है।

मैक्सिको की खाड़ी तथा कैरीबियन सागर तटीय बन्दरगाहों से मुख्यत: चीनी, कोको, नारियल, कहवा, केला, सब्जियाँ, कठोर लकड़ियाँ, पेट्रोलियम, गंधक, लौह अयस्क, बाक्साइट आदि खनिज पदार्थ निर्यात किये जाते हैं। इन बन्दरगाहों द्वारा आयातित वस्तुओं में खाद्य पदार्थ, रासायनिक पदार्थ, वस्त्र, मशीनें, कागज, मोटर गाड़ियाँ, आदि निर्मित पदार्थ प्रमुख हैं।

7. दक्षिणी अटलांटिक मार्ग (South Atlantic Route)

यह मार्ग दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी-पूर्वी तटीय बन्दरगाहों को जोड़ता है। रियो डि जनेरो, सैन्टोस, मान्टीविडियो, ब्यूनसआयर्स, वाहिया ब्लांका आदि इस मार्ग के प्रमुख बन्दरगाह हैं। इस मार्ग से उत्तरी अमेरिका और यूरोप के लिए भी जलयान आते-जाते हैं। रियो डि जनेरो से जलयान केपटाउन होते हुए पूर्वी अफ्रीका, एशिया और आस्ट्रेलिया के लिए भी जाते हैं।

दक्षिणी अमेरिका के पूर्वी तटीय पत्तनों से गेहूँ, मक्का, ऊन, चमड़ा, मांस, कपास, कहवा, तम्बाकू, चीनी आदि के साथ ही लौह अयस्क, मैंगनीज, अभ्रक, बाक्साइट, टंगस्टन आदि खनिज पदार्थों का भी प्रभूत मात्रा में निर्यात होता है। उत्तरी अमेरिका तथा यूरोप से आयातित वस्तुओं में लोहा इस्पात, रेल इंजन एवं वैगन, औद्योगिक मशीनें, मोटर गाड़ियाँ, वस्त्र, रासायनिक वस्तुएँ तथा अन्य अनेक निर्मित वस्तुएँ प्रमुख हैं। दक्षिणी अमेरिका के पूर्वी तटीय पत्तनों के मध्य भी अधिक मात्रा में पारस्परिक व्यापार होता है।

(3) परिवहन नहरें (Transport Canals)

संकीर्ण स्थलीय भाग को काटकर बनाई गयी कुछ नहरों का उपयोग जल यातायात के रूप में किया जाता है। इन्हें परिवहन नहरें कहा जाता है। ये नहरें सिंचाई के लिए प्रयुक्त नहरों से भिन्न होती हैं। विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय जलमार्ग के रूप में दो नहरें प्रमुख हैं—(1) स्वेज नहर, और (2) पनामा नहर। इनके अतिरिक्त लघु या स्थानीय स्तर पर भी कुछ परिवहन नहरें बनायी गई हैं जिनमें कील नहर, स्टालिन नहर, मानचेस्टर नहर आदि उल्लेखनीय हैं। अग्रिम पंक्तियों में स्वेज नहर और पनामा नहर का वर्णन किया गया है।

1. स्वेज नहर (Suez Canal)

निर्माण एवं स्थिति—स्वेज नहर विश्व की अत्यंत महत्वपूर्ण नहर है जिसका बृहत् व्यापारिक महत्व है। यह नहर भूमध्य सागर और लाल सागर के मध्य स्थित है और दोनों को जोड़ती है। इस नहर की खुदाई 1859 में फ्रांसीसी इंजीनियर **फर्डिनेण्ट डिलेसेप्स** के निर्देशन में आरम्भ हुई थी और 10 वर्ष पश्चात् यह नहर यातायात के लिए तैयार हो गयी। 1869 में स्वेज नहर में जलयानों का आना-जाना आरम्भ हो गया। स्वेज नहर की लम्बाई 162 किमी०, औसत चौड़ाई 60 मीटर और न्यूनतम गहराई 10 मीटर है। मिस्र सरकार ने 1956 में स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण कर लिया जिसका अनुमोदन 1967 में संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) ने भी कर दिया। इस प्रकार यह नहर मिस्र के नियंत्रण में है। मिस्र द्वारा राष्ट्रीयकरण किये जाने के पूर्व स्वेज नहर ब्रिटेन और फ्रांस के अधिकार क्षेत्र में थी।

स्वेज नहर के उत्तरी छोर पर पोर्ट सईद और दक्षिणी छोर पर पोर्ट स्वेज स्थित हैं। इन दोनों पत्तनों के मध्य में तीन झीलें स्थित हैं जिनके बीच के स्थल को काटकर (खुदाई करके) उन्हें परस्पर मिला दिया गया है। सबसे उत्तर में भूमध्य सागर से संलग्न **मैंन्जाला झील** है जिसके उत्तरी तट पर **पोर्ट सईद** स्थित है। इसके दक्षिण में लम्बाकार ग्रेट बिटर और लिटिल बिटर झीलें हैं जो लाल सागर के निकट हैं। पोर्ट सईद के दक्षिण मेन्जाला झील को पार करती हुई यह नहर **अलकन्तारा, अलफिरदान** और **इस्माइलिया** पोताश्रयों (Harbours) से होती हुई पहले ग्रेट बिटर झील और फिर लिटिल बिटर झील में प्रवेश करती है और अंतत: लाल सागर में मिल जाती है। नहर के पश्चिमी तट पर स्वेज और पूर्वी तट पर **तौतीक** समुद्र पत्तन स्थित हैं। स्वेज नहर में जल को नियंत्रत करने हेतु किसी फाटक या लॉक लगाने की आवश्यकता नहीं होती है। दोनों बिटर झीलों में पर्याप्त स्थान होने से यहाँ लंगर डालकर जलयानों को ठहराने की भी सुविधा है। लिटिल बिटर झील और लाल सागर के बीच का लगभग 50 किमी० मार्ग बिल्कुल सीधा है।

Scanned with CamScanner

स्वेज नहर का महत्व—स्वेज नहर के निर्माण के पूर्व पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका से एशिया तथा पूर्वी अफ्रीका जाने वाले जलयान उत्तमाशा अंतरीप (Cape of Good-hope) से होकर जाते थे और उन्हें दक्षिणी अफ्रीका का चक्कर लगाना पड़ता था। इससे दूरी और समय अधिक लगते थे जिससे व्यापारिक आदान-प्रदान बहुत कम हो पाते थे। स्वेज नहर के निर्माण से पूर्व और पश्चिम के विभिन्न बन्दरगाहों के मध्य दूरी काफी कम हो गयी है जिससे समय और ईंधन की पर्याप्त बचत होती है। स्वेज नहर बन जाने से लन्दन से मुम्बई की दूरी लगभग 7500 किमी०, लन्दन से टोकियो की दूरी लगभग 5000 किमी० और लन्दन से सिडनी के बीच की दूरी लगभग 2000 किमी० कम हो गयी है। इसी प्रकार न्यूयार्क और मुम्बई की दूरी में लगभग 4500 किमी० की कमी आयी है। इससे पूर्व और पश्चिम के अंतराष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन मिला है।

स्वेज नहर पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के औद्योगिक क्षेत्रों और एशिया तथा पूर्वी अफ्रीका के कृषि प्रधान क्षेत्रों को जोड़ती है। एशियाई तथा पूर्वी अफ्रीकी देशों से अधिकांशतः औद्योगिक कच्चे माल, सूती वस्त्र, जूट के सामान, कृषि उपजें, गर्म मसाले, चीनी, चाय, कहवा आदि यूरोपीय देशों को स्वेज मार्ग से ही भेजे जाते हैं। यूरोप से आने वाली वस्तुओं में इस्पात, मशीनें, वैज्ञानिक उपकरण, मोटर गाड़ियां, रेल के सामान, उर्वरक, दवाएं तथा अन्य रासायनिक पदार्थ प्रमुख हैं। आस्ट्रेलिया से गेहूँ,

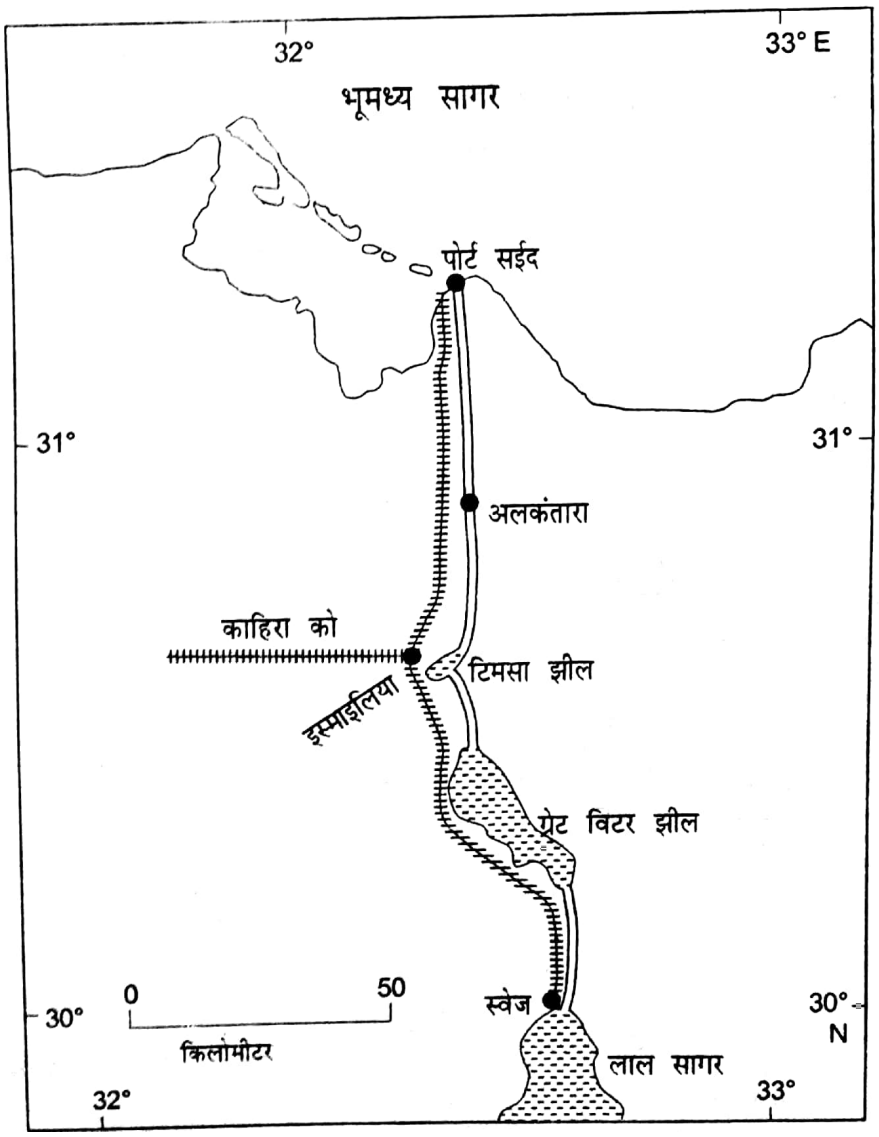

Scanned with CamScanner

ऊन, मांस, सोना तथा न्यूजीलैण्ड से ऊन तथा दुग्ध निर्मित पदार्थों (पनीर, मक्खन आदि) का निर्यात यूरोपीय देशों को स्वेज मार्ग से होता है। पश्चिमी एशिया के पेट्रोलियम उत्पादक देशों से तेल के टैंकर जलयानों द्वारा स्वेज मार्ग से यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका को भेजे जाते हैं।

स्वेज नहर के बन जाने से यद्यपि पूर्व और पश्चिम के देशों की दूरी काफी कम हो गयी है किन्तु इस नहर से गुजरने वाले जलयानों को भारी कर देना पड़ता है। अत: अभी भी सस्ती और भारी वस्तुओं जैसे लोहा अयस्क, कोयला, चूना पत्थर, सीमेन्ट, उर्वरक आदि से भरे बड़े-बड़े जलयान यूरोप और पूर्वी अफ्रीका या आस्ट्रेलिया के मध्य उत्तमाशा अंतरीप से होकर जाते हैं, क्योंकि उस मार्ग से किसी बड़े कर को नहीं चुकाना पड़ता है।

2. पनामा नहर
(Panama Canal)

निर्माण एवं स्थिति—पनामा नहर अटलांटिक महासागर और प्रशांत महासागर को मिलाती है। इसका निर्माण उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका के मध्य स्थित पनामा स्थल सन्धि को काटकर किया गया है। पनामा नहर के निर्माण पर सोलहवीं शताब्दी से ही विचार किया जा रहा था। किन्तु व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण यह कार्य बीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशक में ही सम्भव हो सका। पनामा स्थल संधि की भूमि पहाड़ी होने के कारण कठोर है और इसके दोनों ओर स्थित महासागरों के जल तल में उल्लेखनीय असमानता भी पायी जाती है। ऐसी स्थिति में नहर में कई स्थानों पर लॉक्स (अवरोधक फाटक) बनाना भी अनिवार्य था। पनामा नहर का उद्घाटन 15अगस्त, 1914 को हुआ था। पनामा नहर के मार्ग में **गाटून, टैड्रमिग्वल** और **मिराफ्लोर्स** नामक तीन झीलें हैं। पनामा नहर 82 किमी० लम्बी और 90 मीटर चौड़ी है। इसकी न्यूनतम गहराई 12 मीटर है। नहर के सर्वोच्च भाग की ऊँचाई सागर तल से 26 मीटर है। इस नहर में तीन स्थानों पर जल को नियंत्रित करने के लिए लॉक्स बने हैं—(1) अटलांटिक छोर पर गाटून लॉक्स, (2) मध्य में पैडरो लॉक्स और (3) प्रशांत महासागर के छोर पर मिराफ्लोर्स लॉक्स। इन लॉक्स के द्वारा जलयानों को पार करते

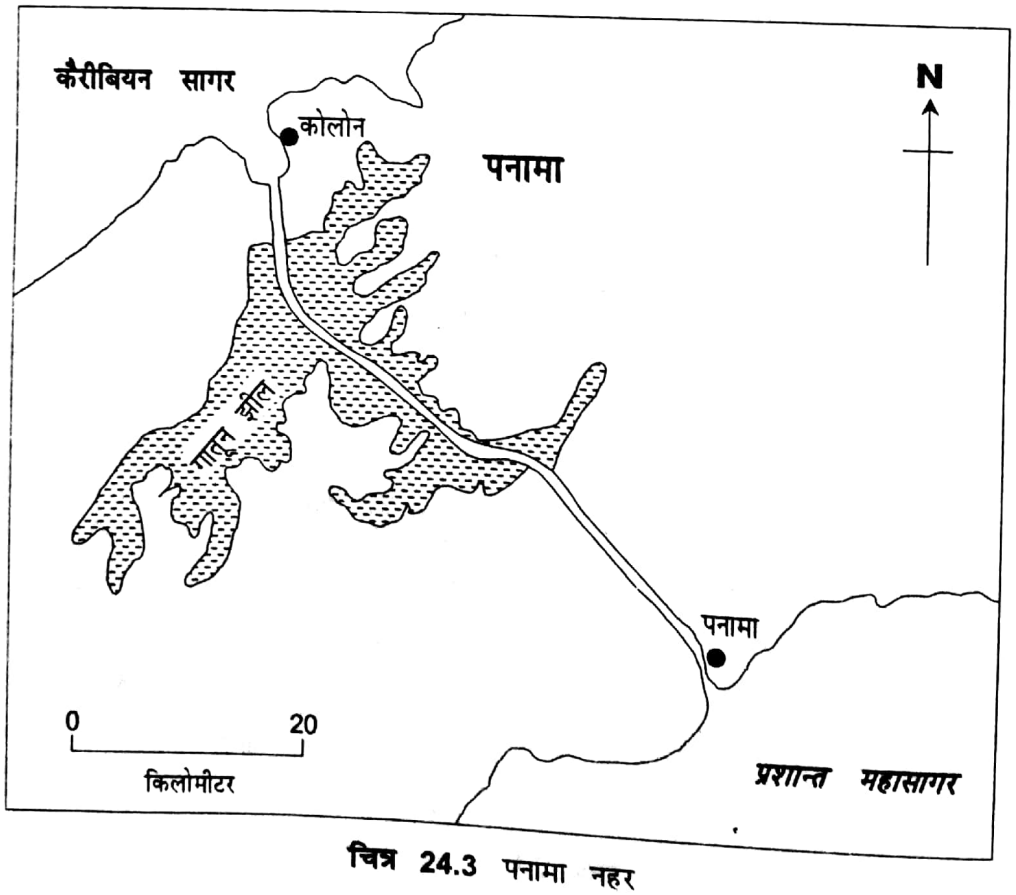

चित्र 24.3 पनामा नहर

Scanned with CamScanner

समय जल स्तर को नियंत्रित किया जाता है जिससे वे पर्वतीय भूमि को सुगमता पूर्वक पार कर लेते हैं। पनामा नहर को पार करने में एक जलयान को 7 से 8 घंटे लगते हैं। इससे चौबीस घण्टे में लगभग 50 जलयान आते जाते हैं।

पनामा नहर का निर्माण मुख्यत: संयुक्त राज्य अमेरिका की आवश्यकता का परिणाम है। इसका विस्तार अटलांटिक महासागर और प्रशान्त महासागर के मध्य है और पूर्वी तथा पश्चिमी तटों के बीच स्थलीय दूरी बहुत अधिक है। पनामा नहर के बन जाने से संयुक्त राज्य के पूर्वी और पश्चिमी भागों के मध्य भारी वस्तुओं के आदान-प्रदान में अधिक सुविधा हो गयी है। पनामा नहर पर संयुक्त राज्य अमेरिका का नियंत्रण है।

पनामा नहर का महत्व—पनामा नहर बनने के पहले यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका के पूर्वी भाग से चलने वाले वे जलयान जिनको प्रशांत महासागर तटीय देशों (उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तट और आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैण्ड) को जाना होता था, दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी छोर (केपहार्न) का चक्कर लगा कर जाते थे। अब पनामा नहर से होकर जाने पर न्यूयार्क और सैन्फ्रांसिस्को के मध्य की दूरी हार्न अंतरीप की तुलना में लगभग 13000 किमी० कम हो गयी है। न्यूआर्लियन्स से सैन्फ्रांसिस्को की दूरी में लगभग 9000 किमी० दूरी की बचत होती है। न्यूयार्क से सिडनी जाने में लगभग 6500 किमी० की दूरी कम हो जाती है। इसी प्रकार न्यूयार्क से बालपराइजो (चिली) जाने में लगभग 6000 किमी० की बचत होती है।

पनामा नहर से होकर जिन क्षेत्रों के मध्य व्यापार में वृद्धि हुई है वे निम्नांकित हैं—

(1) संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी भाग और पश्चिमी भाग,

(2) संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी भाग और दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी भाग,

(3) संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी भाग और आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैण्ड,

(4) संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी भाग और पूर्वी एशियाई देश जापान, चीन आदि,

(5) पश्चिमी यूरोप और उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी भाग।

पनामा नहर से होकर विविध प्रकार की सामग्रियों से भरे जलयान आते-जाते हैं। पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका से गेहूँ, मक्का, कपास, मशीनें, मोटर गाड़ियां, इस्पात, स्क्रैप तथा विभिन्न प्रकार के निर्मित सामान, कोलम्बिया और वेनेजुएला से पेट्रोलियम

Scanned with CamScanner

तथा कहवा, ब्राजील से कहवा और लोह अयस्क, यूरोपीय देशों से इस्पात, मशीनें, वस्त्र तथा अन्य निर्मित सामान पनामा मार्ग से होकर उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी भागों, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड तथा पूर्वी एशिया के चीन, जापान, कोरिया, फिलीपीन्स आदि देशों को निर्यात किये जाते हैं।

आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैण्ड से ऊन, मक्खन, पनीर, चमड़ा आदि का तथा दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तटीय देशों से पेट्रोलियम (कोलम्बिया), तांबा, जस्ता, टिन (चिली), नाइट्रेट्स (पीरू) आदि का निर्यात यूरोप तथा संयुक्त राज्य के लिए पनामा मार्ग से होता है। यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए पूर्वी एशियाई देशों से चाय, रेशम, मछली, सूती वस्त्र, खिलौने तथा कई प्रकार के कच्चे माल और निर्मित सामग्रियाँ पनामा मार्ग से भेजी जाती हैं।

Scanned with CamScanner